Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

पाप-पुण्य की समस्या और 'चित्रलेखा' के नारी पात्र

विकास चौरसिया*

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यासकारों में साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भगवतीचरण वर्मा का विशेष स्थान है। आपका जन्म उन्नाव जिले के सफीपुर तहसील के अन्तर्गत बाँगरमऊ कस्बे के राजेपुर गाँव में 30 अगस्त, 1903 को हुआ था। कविता, कहानी, एकांकी, नाटक, सम्पादक, आलोचक व एक सफल उपन्यासकार के रूप में आप सशक्त साहित्यिकार हैं।

भगवतीचरण वर्मा कहानी की अपेक्षा उपन्यास के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्धि है। आपने अपने सम्बन्ध में कहा था कि, मैं मुख्य रूप से उपन्यासकार हूँ कवि नहीं। आज मेरा उपन्यासकार ही सजग रह गया है, कविता से लगाव छूट गया है। आपके प्रमुख उपन्यास– पतन (1927), चित्रलेखा (1934), तीन वर्ष (1936), टेढ़े मेढ़े रास्ते (1946), आखिरी दाँव (1950), अपने खिलौने (1957), भूले–बिसरे चित्र (1959), वह फिर नहीं आई (1960), सामर्थ्य और सीमा (1962), बिसरे थके पाँव (1963), रेखा (1964), सच्ची सीधी बात (1968), सबहिं नचावत राम गोसाईं (1970), प्रश्न और मारीचिका (1973) आदि हैं।

'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास साहित्य अकादमी से पुरस्कृत है और आपके उपन्यास 'चित्रलेखा' पर दो बार फिल्मों का निर्माण हो चुका है।

'चित्रलेखा' उपन्यास में उपन्यासकार ने पाप–पुण्य की समस्या को ऐतिहासिक कथानक के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है– पाप क्या है? उसका निवास कहाँ है? पाप किस कहते हैं? किन परिस्थितियों में पाप का उद्‌भव होता है? आदि पाप और पुण्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए महाप्रभु रत्नांबर के दो शिष्य श्वेतांक और विशालदेव दो अलग–अलग व्यक्तियों के द्वारा पाप–पुण्य की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है– "हाँ! पाप की परिभाषा करने की मैंने भी कई बार चेष्टा की है, पर सदा असफल रहा हूँ। पाप क्या है, और उसका निवास कहाँ है; यह एक कठिन समस्या है, जिसको आज तक नहीं सुलझा सका हूँ। अविफल परिश्रम करने के बाद, अनुभव के सागर में उतराने के बाद भी जिस समस्या को नहीं हल कर सका हूँ उसे किस प्रकार तुमको समझा दूँ?"[1] श्वेतांक सामन्त बीजगुप्त का सेवक बनकर तथा विशालदेवा योगी कुमारगिरि का शिष्य बनकर पाप–पुण्य की समस्या का समाधान पाने का प्रयास करते हैं।

उपन्यास में पात्रों के माध्यम से रोचकता, कलात्मकता, आकर्षण व जिज्ञासा पैदा होती है जो पाठक को आदि से अंत तक प्रभावित किए रहती है इसीलिए प्रेमचंद ने लिखा था 'उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।' 'चित्रलेखा' उपन्यास के प्रमुख नारी पात्रों में 'चित्रलेखा' व 'यशोधरा' हैं।

'चित्रलेखा' उपन्यास का एक ऐसा चरित्र है, जिसका स्वयं अस्तित्व है और वह किसी भी परिस्थितियों का सामना दृढ़ता से करती है। उसका पूरा जीवन उतार–चढ़ाव से युक्त रहता है। अपनी सुन्दरता, तार्किकता, बुद्धिमत्ता, वाक्‌पटुता में वह कुमारगिरि व चाणक्य जैसे विद्वानों को भी निरुत्तर कर देती है।

'चित्रलेखा' एक ब्राह्मण कन्या थी, जो 18 वर्ष की उम्र में विधवा हो जाती है। यह उपन्यास की नायिका भी है। वर्मा जी ने नायिका पात्र द्वारा ही पाप क्या है? इस उपन्यास का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है। उपन्यास का नायक बीजगुप्त चित्रलेखा का नृत्य देखकर उससे मिलने की आतुर हो जाता है और याचना करता है कि, "क्या कभी आपके स्थान पर आपके दर्शन कर सकने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँगा।"[2]

'चित्रलेखा' एक कुशल नर्तकी व अद्वितीय सुन्दरी है। वह भोले–भाले श्वेतांक को भी अपने यौवन के पाश में बांधकर उसे अपने यौवन का

*रिसर्च फेलो, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

दिवाना बना लेती है। प्रथम प्रसंग में वह संयमित जीवन की आलोचना करती है तथा श्वेतांक को मदिरापान के लिए विवश कर देती है– "श्वेतांक ने एक बार मदिरा के पात्र को हटा देने को सोचा; पर चित्रलेखा की हंसती हुई आँखों में जादू था। वह न तो चित्रलेखा को रोक सका, न अपने ही को।"[3] उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर श्वेतांक कहता है, "देवी, मेरे जीवन में तुम बवंडर बनकर एकाएक क्यों आ पड़ी?"[4] चित्रलेखा हंसते हुए श्वेतांक से कहती है कि, जिसे तुम साधना कहते हो वह आत्मा का हनन है। मैंने तुम्हें केवल यह दिखाने का प्रयास किया है कि मादकता जीवन का प्रधान अंग है। रही हृदय में ज्वाला उत्पन्न करने की बात, तो मैंने केवल तुम्हें जीवन का वास्तविक स्वरूप दिखलाया है।

चित्रलेखा के चरित्र की एक विशेषता उसका स्पष्टवादी होना भी है। उसे जब यह पता चलता है कि कुमारगिरि ने उसे झूठ के सहारे उसे अपने वश में किया है तो वह उसे धिक्कारती है, वासना की कीड़े, पशु, पापी आदि शब्दों से सम्बोधित करती है– "तुम्हारी तपस्या और तुम्हारा ज्ञान तुम्हारी साधना और तुम्हारी अराधना– यह सब भ्रम है, सत्य से कोसों दूर है। तुम अपनी तुष्टि के लिए गृहस्थ आश्रम की बाधाओं से कायरतापूर्वक सन्यासी का ढोंग लेकर विश्व को धोखा देते हुए मुख मोड़ सकते हो।"

चित्रलेखा नारी सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है। वह कला की सच्ची आराधिका है। संसार के अनुभवों के आधार पर उसने अपना जीवन दर्शन बना लिया है। वह कुमारगिरि को समझाती है– "योगी! तपस्या जीवन की भूल है,.... तपस्या की वास्तविकता है आत्मा का हनन।"[5] उसके व्यक्तित्व में कला और दर्शन का मिला रूप दिखायी देता है। वह कहती है 'मेरी दृष्टि में कला का सर्वोच्च स्थान है, जो मनुष्य कला का अपमान करता है वह मनुष्य नहीं पशु है।'

'चित्रलेखा' उपन्यास की दूसरी नारी पात्र यशोधरा है, जो आर्य मृत्युंजय की एकलौती कन्या है। उसमें शान्ति एवं सौम्यता, अतिथि सत्कार की भावना, त्याग की भावना, आदर्श भारतीय नारी, प्रकृति सौन्दर्य की उपासिका व पिता की आज्ञाकारिणी आदि जैसे सभी गुण विद्यमान हैं। वह नवयौवना है, उसके सौन्दर्य के विषय में कथाकार का कथन है, "यशोधरा के यौवन का विकासकाल था और मृत्युंजय के जीवन का निर्माण। अथाह सम्पत्ति की स्वामिनी यशोधरा से विवाह करने के लिए युवक का तत्काल तत्पर हो जाना स्वाभाविक था ही, पर साथ ही यशोधरा सुन्दरी थी और सुन्दरी भी उच्चकोटि की।"[6]

उपन्यासकार ने उसके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लिखा है, उसके शांत मुखमण्डल पर भोलापन अपना आधिपत्य जमाये हुए था। उसकी हंसी की सुरीली झंकार में यौवन से पराजित बचपन ने शरण ली थी। हरिणि की बड़ी–बड़ी सुन्दर आँखों में संकोच था और उसके रसयुक्त अरुण कपोलों में लज्जा थी। यशोधरा परम सुन्दरी थी जिसे देखकर चित्रलेखा भी चकित हो गई– "यशोधरा को देखकर चित्रलेखा चकित हो गई। उसे आज तक अपनी सुन्दरता पर गर्व था और आत्मविश्वास था; पर यशोधरा ने एक क्षण में उसका गर्व दूर कर दिया; आत्मविश्वास डिगा दिया।"[7]

यशोधरा में अतिथि सत्कार की भावना है। वर्षगांठ के उपलक्ष्य में जब चित्रलेखा पर महिलायें व्यंग्य कसती हैं, तो वह कहती है– "बहन, तुम लोक व्यवहार में बहुत कुशल हो।"[8] यह यशोधरा में ही गुण है कि, वह सभी से प्रेम से मिलती है, उसके अन्दर न तो कुलीनता का घमण्ड है और न ही अभिमान। इसीलिए वह नर्तकी चित्रलेखा को भी उतना ही सम्मान देती है जितना अन्य सभी सम्मानित गणों को। इस प्रकार यशोधरा सरलता एवं पवित्रता की प्रतिमूर्ति है। उसमें न तो द्वेष है, न ही कटुता। वह पवित्र प्रेम की साकार प्रतिमा है। डॉ0 सुषमा धवन ने भगवतीचरण वर्मा के चरित्रों की विशिष्टता की ओर संकेत करते हुए लिखा है कि– "निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, वर्मा जी के पात्रों की अपनी विशेषता है। वे वर्ग का प्रतिनिधित्व अवश्य करते हैं पर उनमें अपनी चारित्रिक विशेषतायें भी हैं। इस प्रकार वर्मा जी के पात्र व्यक्तिवादी उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं।"[9]

अन्त में उपन्यासकार ने महाप्रभु रत्नांबर के माध्यम से पाप–पुण्य को परिभाषित करने का प्रयास

किया है, दोष केवल परिस्थितियों का होता है, "संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पड़ता है।"[10]

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. चित्रलेखा, भगवतीचरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1993, पृ0 8
2. वही, पृ0 14
3. वही, पृ0 29
4. वही, पृ0 29
5. वही, पृ0 38
6. वही, पृ0 80
7. वही, पृ0 82
8. वही, पृ0 83
9. हिन्दी उपन्यास, डॉ0 सुषमा धवन, पृ0 95
10. चित्रलेखा, भगवतीचरण वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1993, पृ0 199